देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 5 नवम्बर 2006

जंगल का संरक्षण कौन कर रहा है- ग्रामीण समुदाय या सरकारी फौज!

गॉव का अपना सामूहिक जंगल, जिसे सुरक्षा की दृष्टि से किसी देवी–देवता के नाम से जोड़ दिया जाता, उसे ओरण या देवबणी कहते हैं। इस तरह के गॉवाई जंगल देश के विभिन्न राज्यों में अलग–अलग नाम से पुकारे जाते है, जैसे – केरल राज्य में कावू, कर्नाटक में देवराकाडू, महाराष्ट्र में देवओरण, छतीसगढ़ में सरना तथा राजस्थान में देवबणी या ओरण के नाम से जाना जाता है। राजस्थान में 'ओरण' न केवल पर्यावरण संरक्षण व संतुलन बनाये रखने की परम्परा है बल्कि ओरण से चारा, पानी तथा जड़ी–बूटियां समुदायों को पर्याप्त रूप में मिलती हैं। ओरण–देवबणियों ने गायों, बकरियों, भेड़ों, हिरणों तथा वन्य जीवों आदि को सदा अभय दिया है। ग्रामीण समुदायों की आस्था व संस्कृति के सहारे सदियो से ईन जंगलों व वन्य प्राणियों को बचाये रखा है। अतः देवबणी ओरण जैव–विविधता प्रबन्धन की जीवंत परम्परा है।

हमारे देश में लगभग 10 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल ओरणों से आछादित है। यदि राजस्थान के अकेले रेगिस्तान प्रभावित 9

जिलों की स्थिति देखें तो 537000 हैक्टेयर क्षेत्रफल ओरणों से आछादित है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा किये गये सर्वेक्षण के आधार पर एक अंकन के अनुसार राजस्थान के 1100 मुख्य ओरण –देवबणियों का क्षेत्रफल लगभग 1 लाख हैक्टेयर है। जबकि राजस्थान में कुल ओरण –देवबणिया की संख्या लगभग 25000 हैं। यानि 25000 वन्य अभ्यारण्यों की सुरक्षा हेतु न जंगलात विभाग की जरूरत, न तारबन्दी की और न ही चार दिवारी की, क्योंकि ओरणों को गॉव की सामूहिक सुरक्षा प्रदान होती है जो गॉव के एक अलिखित संविधान से संचालित होती है। वही दूसरी तरफ लगभग 9 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल जो राजस्थान के कुल 27 वन्य जीव अभ्यारणो के अन्तर्गत आता है, उसके प्रबन्धन हेतु अरबो रुपये खर्च होता है और प्रबन्धन फिर भी ठीक नही, उदारहण स्वरुप सरिस्का वन्य अभ्यारण से बाध पूरी तरह से खत्म हो गये। अत यह विचारणीय सवाल है कि जंगल का संरक्षण कौन कर रहा है – समुदाय या सरकारी फौज।

स्पष्ट है कि सामुदायिक पद्वतियां जैसे ओरण व देवबणी आज भी जंगल बचाये रखने के लिये कारगर व उपयुक्त हैं। अत इन पद्वतियों के पुनरोत्थान पर ज्यादा घ्यान देने की जरुरत है। इस अंक में ओरण देबवणी संरक्षण के माडल व केस स्टडी प्रस्तुत है, जो ओरण देवबणी संरक्षण व पुनोःत्थान की दिशा में कारगर साबित हुई हैं। यह अंक पूर्व अंकों की श्रृंखला में प्रस्तुत है।

कृपाविस

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान
गांव–बख्तपुरा, पो0–सिलीसेढ झील, जिला अलवर–301001 (राजस्थान)
फोन – (0144) 2344863
ई–मेल: krapavis_oran@rediffmail.com
सम्पादन : अमन सिंह व प्रतिभा सिसोदिया

देवबणी– ओरण संरक्षण व प्रबन्धन का 'कृपाविस माडल'

कृषि एवं पारिस्थीतिकी विकास संस्थान (कृपाविस/कृपा संस्था) एक स्वैच्छिक संस्थान है जो 1992 से राजस्थान विशेष कर अलवर जिले में ग्रामीण समुदायों को अपने प्राकृतिक संसाधनों के सुधार और विकास में लोगों की संगठित पहल को मजबूत बनाने और सामुदायिक जंगलों देबवणी– ओरण संरक्षण व प्रबन्धन कार्य में लगी है। देबवणी/ओरण संरक्षण व प्रबन्धन कार्य कैसे सम्पादित होता है, इसका नमूना/मॉडल यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

प्रथम चरण – जागरुकता व सूक्ष्म नियोजन तैयार करना

- सर्म्पक व बैठकें – ओरण देबवणी गॉव में सर्म्पक व बैठकों का आयोजन
- अध्ययन– कृपाविस द्वारा विकसित आठ पृष्ठीय फार्म में सर्वे
- जागरुकता– ओरण व देबवणी के संरक्षण व प्रबन्धन पर गॉव में जागरुकता तथा ग्रामीणों को संगठित करना, गावों में ओरण देबवणी के पुनरोत्थान हेतु
- प्रशिक्षण– ओरण देबवणी के बेहतर ढंग से संरक्षण व प्रबन्धन पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन
- सूक्ष्म नियोजन तैयार करना– देबवणी/ओरण के पुनरोत्थान हेतु अध्यन, सर्वे, पी आर ए, जागरुकता बैठक, प्रशिक्षण आदि के आधार पर पुनरोत्थान/बेहतर प्रबन्धन व संरक्षण हेतु सुक्ष्म नियोजन तैयार करना

द्वितीय चरण – ओरण/देबवणी के पुनरोत्थान/बेहतर प्रबन्धन हेतु कार्य करना

- देबवणी ओरण में भू संरक्षण (मिट्‌टी कटाव व नमी रोकने) हेतु 'टक', चैक डेमस, ट्रेंचीग, कंन्टूर आदि का निर्माण
- देबवणी ओरण में परम्परागत जल स्त्रोतों जैसे तालाब, झरना, बावडी, जोहड, कुन्ड़, कुइया, आदि का पुनरोत्थान या/तथा नये स्त्रोतों का निर्माण।
- वृक्षारोपण व बीजारोपण विशेषकर स्थानीय प्रजाति तथा जड़ी बूटीं के पौधों का
- स्थानीय तथा दुर्लभ प्रजातियों की पौधशालाए उगाना
- देबवणी के सुरक्षा हेतु सामाजिक फेंसिग/ कोरा पारा
- देबवणी रखरखाव हेतु साधु– सन्त (गार्ड) की व्यवस्था
- बेहतर प्रबन्धन हेतु वन समिति महिला मण्डल अन्य या ग्राम स्तरीय संगठन का गठन
- सांस्कृतिक मेलो का वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक आयोजन

तृतीय चरण– ओरण/ देवबणी पर समाज तथा पंचायत का अधिकार हेतु नेटवर्किग

देवबणियो व ओरणो पर समाज तथा पंचायत का अधिकार हो तथा ओरण व्यवस्था पुन ठीक हो इस दिशा में नेटवर्किंग गतिविधियां जैसे –

- पंचायत की बैठक आयोजित कर देबवणी संरक्षण कार्यो में सहभागी बनाना
- दुसरे गॉव के समुदायों के साथ मिटिंग कार्याशाला आदि का आयोजन
- स्वैच्छिक तथा सम्बन्धित सरकारी संस्थाओ के साथ सम्पर्क एवं समन्वयन
- विषय पर संदर्भ सामग्री तैयार व प्रसारित करना
- क्षेत्रीय तथा राज्य स्तरीय कार्यशालाओं का आयोजन
- स्कूल व कॉलेजों के शिक्षकों व विद्यार्थियों के साथ वार्ता
- नीति निर्धारकों, योजनाकारों, प्रशासन, राजनेताओं के साथ बैठकों का आयोजन।

> ग्राम्य पारिस्थितिकी विकास के तीन धणी।
> टिकाउ कृषि उन्नत मवेशी और देवबणी।।

रोगडा की देवबणी, जल-जंगल सरंक्षण की अग्रणी

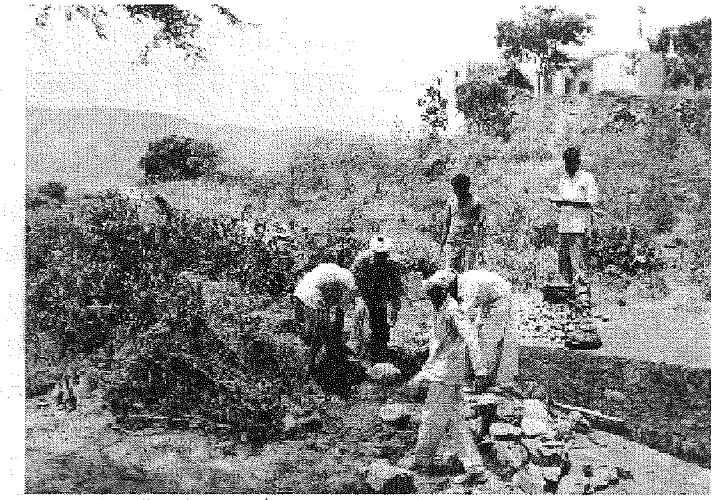

रोगडा गांव अलवर जिले की उमरैण पंचायत समिति की ढ़ेहलावास ग्राम पंचायत में "सीलीसेढ़ छींड" में स्थित है। गॉव का कुल क्षे़त्रफल 481 हेक्टेयर है। यहा गुर्जर समुदाय के लगभग 50 परिवार निवास करते है, जिनकी आबादी लगभग 400 है। यहॉ के लोगो का प्रमुख व्यवसाय पशुपालन व खेती है। गॉव की पूर्व दिशा में 'देवनारायण की बणी' स्थित है जो गॉव की आस्था व जीवन का केन्द्र बिन्दु है। इस बणी में गॉव के पशुओं, वन्य प्राणीयों व मानव जलापूर्ति हेतु एक तालाब है। तालाब के कमांड एरिया (निचली तरफ) जंगल व एक कुँआ है। देबवणी लगभग 50 बीधा क्षेत्र में फैली हुई है।

देबवणी में पिछले कुछ वर्षो में ह्रास हुआ है। कृपा संस्था (कृषि एवं पारिस्थीतिकी विकास संस्थान) के प्रयासो से यहॉ के गाव में पुन जाग्रति आई है तथा इस देबवणी के पुनरोत्थान हेतु गॉव ने संस्था के साथ मिलकर निम्न कार्य किये है:

- देबवणी में स्थानीय प्रजाति के पौधौ का वृक्षारोपण किया
- देबवणी के आसपास खेतों पर तथा देबवणी के तालाब की आगोर में फलदार व चारे हेतु कलमी (गोला) बेर के पेड लगाए
- मिट्‌टी कटाव व नमी रोकने हेतु छोटे 'टक' चैकडेम का निर्माण किया
- देबवणी रखरखाव हेतु गॉव ने साधु की व्यवस्था की
- देबवणी के सुरक्षा हेतु गॉव ने दो तरफ पारा की व्यवस्था की
- प्रबन्धन हेतु ग्राम स्तरीय संगठन का गठन
- सांस्कृतिक मेले का वर्ष में दो बार आयोजन
- तालाब की अपरा निर्माण का कार्य विचाराधीन है

आज इस देवबणी में विभिन्न प्रजातियों जैसे धोक, सालर, खैणा, जाल, पापड, नीम, रोंन्ज, झाडबेर देशी, घझिंडा, छीला, पीपल, कडीयाला, गुलर, चापूण, गणगेर, सफेदा, बील, टींडण, बासा आक, धोला कुडा, बबुल, काला खैर, खैरी, बेर आदि के पौधे विध्यमान हैं/वन्य प्राणी मोर, तितर, माकड (बन्दर), नेवला, गिदड, नील गाय, सर्प आदि पाये जाते हैं।

देबवणी में होने वाले घास का उत्पादन प्रतिवर्ष गॉव के लोगो को ही निलामी कर बेचा जाता है जैसे पिछले वर्ष में लगभग 2200 रु की आय घास से हुई है। इससे होने वाली आय को देबवणी संरक्षण कार्य में लगाया जाता है। गॉव का पशुधन जिसमें 100 गायें, 300 भैसे, 700 बकरियां इस देबवणी में स्थित जल स्त्रोत तालाब पर निर्भर है। जिन्हे पूरे वर्ष चारा व पानी देबवणी के आस पास के क्षेत्र से मिलता है।

गुर्जर समुदाय के इष्ट देव 'देवनारायण' इस देबवणी के सच्चे संरक्षक हैं। देबवणी में देवनारायणजी की पूजा यहा के साधु करते हैं तथा साधु देबवणी सुरक्षा में महती भुमिका निभातें है। यहॉ के ग्रामीण समुदाय जिनमें श्री लालाराम गुर्जर, श्री शीशराम गुर्जर आदि का देबवणी सरंक्षण कार्य में विशेष योगदान रहा है। यह देबवणी रोगडा गॉव के लोगो की संस्कृति, आस्था, विश्वास का केन्द्र है। जिस निमित प्रतिवर्ष दो बार – भादवा व आसोज में मेंलो का आयोजन होता है। अत रोंगडा समृद्ध व अग्रणी गॉवों की श्रेणी में है जहॉ लोगो ने देबवणी के माध्यम से जल व जंगल बचाये रखे है।

कालीखोल गॉव – ग्राम स्तरीय संगठन 'महिला मण्डल' का 5 वर्ष का सफर

कालीखोल गॉव अपने आप में एक बहुत गरीब लेकिन प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण गॉव है। यह सरिस्का के बफर एरिया में पहाडी के नीचे बसा हुआ है यहॉ की जनसंख्या 1500 के आसपास है। इसमें दो तरह की जातियॉ निवास करती हैं– बैरवा एवं गुर्जर। गुर्जर जाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन एवं खेती है। बैरवा लोगों का मुख्य व्यवसाय बेलदारी एवं खेतीहर किसानों के यहॉ मजदूरी एवं छोटी मात्रा में खेती करना है। इस गॉव में सुविधाओं की कमी तथा यहॉ महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान नें देवबणी/ओरण संरक्षण, कृषि, पशुपालन पर गॉव कालीखोल में यहां के समूदायों के साथ मिलकर सुधार के लिये अनेकों कदम उठायें है। इस गॉव में ग्राम स्तरीय संगठन 'महिला मण्डल' बने। शुरू में महिलाओं का मिटिंग में उन्हें महिला मण्डल की जानकारी और उसके लाभों के बारे में बताया गया और मण्डल के गठन के बारे में ट्रेनिंग दी गई। महिलाओं को एक्सपोजर विजिट भी करवाये गयें जिससे उनकी जानकारी एवं क्षमता का विकास बढ़े।

गॉव के लोगों में सफाई स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अभाव था। इस कमी को देखते हुए संस्था ने उनके यहॉ एक न्यूट्रिशन प्रोग्राम चालू किआ। तथा यहॉ पर 120 महिलायें इस पोषाहार से लाभन्वित हुई। जोहड़ की मरम्मत का कार्य हुआ। इस कार्य में महिलाओं ने श्रम दान भी किया। कालीखोल गॉव में मण्डल के कई सदस्यों के खेतों की मेड़बन्दी व टक का काम भी संस्था द्वारा कराया गया। संस्था की ओर से मण्डल के सदस्यों को अच्छे किस्म के बीज वितरण भी किये गये तथा उन्हें अच्छे बीजों के बारे में ट्रेनिंग दी गई। पशु स्वास्थ्य व सर्वधन हेतु गांव के ही युवा किशन जाटव को ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता में विकसित किये।

आज कालीखोल गॉव की महिलाओं को परस्पर बैठना एवं उनके साथ परेशानियों को समझना एवं समस्याओं को मिल बैठकर उनका अनुसरण करना यह सब आज सम्भव है। गॉव में महिलाऐं जोहड़ बनाने में अपने हाथ से मजदूरी करती है एवं एनिकट में बेलदारी करना एवं महिला मण्डल का हिसाब किताब रखना समय–समय पर मिंटिग करना एवं मण्डल आगे क्या कर सकता है उसके बारे में विचार विर्मश करती हैं। हमेशा मिंटिग में समय पर जाती रहती है। मण्डल की किसी भी महिला को कही भी मिंटिग में भेज दें तो वह हमेशा जाने की इच्छा एवं सीखने की इच्छा रखती हैं। महिलाये बराबर बैठना सामान्य समझना खुलकर बात करना लगभग सीख गई हैं। महिला मण्डल ने पुरूषों की शराब बन्दी पर भी कार्य किये। महिला मण्डल की महिलायें ने एक जुट होकर शराब का ठेका हटाया। मण्डल बनने से हर माह 20 रूपयें की अपनी बचत भी करती हैं। मण्डल ने अपनी बचत जमा करके बैंक में खाता खुलवा और वह जरूरत पडने पर बैंक से अनेकों बार लाखों रुपये लोन भी लिया हैं। आज इस गॉव में 4 महिला मण्डल है। जो अपनी बचत करके स्थिति सुधारी है। मण्डल द्वारा ही उनके गॉव में आज जोहड, उनके खेतों की मेडबन्दी, और अच्छे व उन्नत बीजों का चयन करना। पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी आज उन्हें प्राप्त है। आज अपनी मण्डल की मींटिग हर माह स्वंय कर लेती है आज उन्हें किसी की सहायता की जरूरत नहीं पडती और वह महिलायें अब खुल कर सबसे बात भी कर लेती है। तभी तो 29 अक्टूबर 2006 तथा 5 नवम्बर 2006 को राजीव गॉधी फाउडेशन द्वारा गठित विभिन्न स्वंम सहायता समूहो की प्रतिनिधियों ने 2 समूहो मे 60 महिलायों ने आपसी आदान प्रदान हेतु भम्रण किया।

ग्राम स्तरीय संगठन 'वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति' : कृपाविस के अनुभव

जंगल सुरक्षा हेतु सरकारी फौज यानि वन विभाग आज इस बात से भली भॉती परिचित हो गया है कि ग्रामीणों के साथ मिलकर ही वन विकास व सुरक्षा की जा सकती हैं। इस हेतु वन विभाग ने 'साझा वन प्रबन्धन' पद्वति प्रारम्भ की तथा ग्रामीणों के ग्राम स्तरीय संगठन 'वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति' बनाने प्रारम्भ किये। ग्राम स्तरीय संगठन तो आदिकाल से ही सामुदायिक संसाधनों के प्रबन्धन के लिए उत्तरदायी रहे हैं। ये संगठन गॉव की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा विकास की गतिविधियों में एक संस्था के तौर पर बडी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे ग्राम स्तरीय संगठनों की प्रासंगिकता आज के समय में और भी अधिक बढ गयी है क्योंकि सामूहिक व प्राकृतिक संसाधनों में बिगाड बडी तेजी से हो रहा है। इसलिए सरकारी तथा गैर सरकारी स्तरों पर ग्राम स्तरीय संगठनों के विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

इसी आवश्यकता के अधार पर सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर का साझा प्रयास अलवर में भी हुआ। 'कृषि एवं पारिस्थतिकी विकास संस्थान' ;कृपाविस गैर सरकारी तथा वन विभाग अलवर सरकारी द्वारा 'साझा वन प्रबन्धन' के तहत चांदौलीं, नादनहेड़ी तथा अम्रतवास गॉवों में 'वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति' का विधिवत गठन हुआ। वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी, क्षेत्रीय वनपाल, क्षेत्रीय व रक्षक आदि ने आम सभाओं में भाग लेकर 11 सदस्यीय कार्यकारिणी का चुनाव कराया जिसमें ग्रामिणों, पंच, सरपंच, वन विभाग के वनपाल, महिलाओं सरकारी स्कूल के अध्यापक तथा कृपाविस के कार्यकता को सदस्य नियुक्त किया गया। समिति बनाने से पूर्व बैठकें व प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये जिनमें जागरुकता, आम सदस्यों की सूची तैयार कर सहमति, महिलाओं की उपसमितियों का गठन आदि कार्य किये गये। इन सभाओं में प्रदर्शनी, वार्ता तथा साझा वन प्रबन्धन पर विशेष साम्रगी 'देवबणी री बात' द्वारा लोगों को जागरुक किया गया। समितियों की ग्रामवार पंजिका संधारित की गयी।

ग्राम पंचायतों की बैठक आयोजित कराके कार्य्रकारिणी समितियों का अनुमोदित कराया गया। समितियों की सीलें;मोहरें बनवाइ गयीं। समितियों के बैंकों में तीन. तीन खाते खुलवोय गये। नव निर्वाचित वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समितियों के कार्य्रकारिणी सदस्यों को प्रशिक्षण कृपाविस बणी प्रशिक्षण केंन्द्र बख्तपुरा में दिया गया।

इसके बाद इन गॉवों के वन विकास, सुरक्षा तथा उपयोग हेतु अगले 10 वर्ष की सुक्ष्म योजना बनाने का कार्य हुआ जिससे कि वन संसाधनो के सतत उपयोग, सरंक्षण, पुनर्वास व पुनरुत्पादन मे ग्रामीणे की पूर्ण भागी दारी सुनिश्चित की जा सके। जिस हेतु इन गॉवों में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन पद्वति से कृपाविस टीम ने गांवो मे तीन तीन दिन भ्रमण, सभाए, ग्रामीण समूह अभ्यास, पी.आर.ए. अभ्यास, आकंडा एकत्रिकरण सर्वे, स्कैच मेप आदि गतिविधियां करके सुक्ष्म नियोजन प्रतिवेदन तैयार किये। 'वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति' द्वारा सुक्ष्म नियोजन प्रतिवेदन के अनुमोदन हेतु प्रत्येक गॉव मे सभाए आयोजित की गयी।

इसके बाद चांदौलीं, नादनहेड़ी तथा अम्रतवास गॉवों की समितियों के पंजीयन हेतु उपवन संरक्षक अलवर को ग्रामवार संधारित आवेदन प्रलेख मय उपरोक्त सभी प्रलेखों की प्रतियों के ज़मा कराये गये। इनके अलावा अन्य गॉवों ढ़ेहलावास, रोगडा, सीरावास, सुन्दरवास, बख्तपुरा, डोबा आदि गॉवों की ग्राम पंचायतों की बैठक आयोजित कराके समितियों के पंजीयन हेतु प्रस्ताप उपवन संरक्षक अलवर को 1 वर्ष पूर्व भेजे। अब इससे आगे की कार्यवाही सरकारी हाथों में है।

22 देशो के प्रतिनिधि दल ने ओरण – देवबणी संरक्षण कार्यो का अवलोकन व सराहना की

11 अप्रेल 2006 को, 'संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम' से जुडे 22 देशो के प्रतिनिधि दल ने कृपाविस द्वारा कराये ओरण देवबणी संरक्षण कार्यो का क्षेत्र भ्रमण किया तथा इस दौरान बेरा व बख्तपुरा देबवणियो का अवलोकन किया तथा इन कार्यो की सराहना की। कृपाविस द्वारा गठित महिला मण्डलों के साथ बैठक कर देवबणी/ओरण संरक्षण के कार्यो के बारे में जानकारी ली। अलवर जिले के तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री राजीव ठाकुर ने आकर प्रतिनिधी मण्डल से भेट की तथा विभिन्न सरकारी अधिकरी भी साथ रहे थे। इस दल का नेतृत्व नेपाल की राजकुमारी तथा सयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की अधिकारी सुश्री देवयानी राणा व श्री पी. सोदी ने किया। भ्रमण के दौरान श्रीमति प्रतिभा सिसोदिया ने दल की अगुवाई की ।

'ओरण–देववणी परम्परागत स्वास्थ्य केन्द्र' विषय पर प्रशिक्षण

दिनांक 6 से 8 अक्टूबर 2006 को कृषि एंव पारिस्थितिकी विकास संस्थान द्वारा 'कृपाविस बणी' में गुणियों (परम्परागत चिकित्सकों) का प्रक्षिशण आयोजित किया गया जिसमें अलवर व जयपुर जिले के 40 चुनिन्दा गुणियों (महिला व पुरुष दोनों) नें भाग लिया।

इस प्रशिक्षण में गुणियों ने ओरण देवबणियों में पाई जानी वाली जडी बूटियो पर अपने अपने अनुभवों का आदान प्रदान किया। परम्परागत औषधीयों के खजाने वाली प्रजातियां आकड़ा, ढ़ाक तथा कैर के औषधीय दृष्टि से महत्व गुणी

आंघाराम गुर्जर ने विस्तृत से समझायां और इनके संरक्षण पर विशेष जोर दिया। प्रक्षिशण के दौरान गुणियों ने विभिन्न ओरण देवबणियों का भ्रमण कर विभिन्न तरह के औषधीय गुण की विभिन्न प्रजातियों काला कैर, सफेद बगरा, सहजना, बॉसा (आंडूसा), शंख पुष्पी, शतावरी, गोखरू, दूधेली, मोथा; कंद, खैना, धतूरा, सत्यानासी, सनाय वज्रदंती, बाबची, कटेरी, गंनगेर, द्रोणपुष्पी उंट कंटाला, अकोल, गूगल आदि की जानकारी ली। मानव तथा पशुओं को विभिन्न बिमारियों में दी जाने वाली जड़ी–बूटियों पर चर्चा की।

जयपुर से आये एस आर. सोसायटी के वैध श्री मुकेश चन्द शर्मा ने जडी बूटियो से बनाने वाली विभिन्न औघ्धियो पर प्रशिक्षण किया। ओरण विशेषज्ञ श्री अमन सिंह ने जडी बूटियों हेतु देवबणियों के संरक्षण करने हेतु गुणियों को प्रशिक्षण दिया तथा इनकी ओरण देबवणी संरक्षण मे भूमिका बढाने का आवाहन किया।

आई.आई.टी वैज्ञानिकों द्वारा ''कृपाविस बणी'' में सिल्वी पेस्चर विकास मॉडल विकसित किया

वर्ष 2006 में भारतीय प्राधोगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) दिल्ली के वैज्ञानिक, ओरण के विकास में चारा उत्पादन की प्रबल सम्भावनाए देखते हैं। इसी दृष्टिगत बख्तपुरा गावं में ''कृपाविस बणी'' पर आई. आई. टी. ने सिल्वी पेस्चर (चारा) का एक माडल विकसित किया गया है तथा साथ–साथ विभिन्न गांवों में कृपाविंश के साथ मिलकर 25 चुन्निदा किसानों के यहाँ भी माडल विकसित किये है।

देवबणियों/ओरणों के रखरखाव व संरक्षण में साधुओं/सूफिओं की भूमिका

साधुओं/सूफिओं की देवबणी ओरणों के रखरखाव व संरक्षण में अहम भूमिका रही। साधु एक जगह रुक कर देवबणियों/ओरणों के रखरखाव व सुरक्षा का कार्य करते। पहले देवबणियों औरण में बहुत सारी जड़ी–बूटियॉ होती जिससे साधु ईलाज करतें थे और जो भी इलाज कराने आता था वे वंहा कुछ चडावा छडाता था। जिससे साधुओ कि भोजन, रहने व खाने में व्यवस्था होंती। गांव भी सहयोग करता। देवबणी औरणो में जो साध/सूफीं रहते उनके खाने व रहने की व्यवस्था गांव के लोगों द्वारा ही की जाती रही।

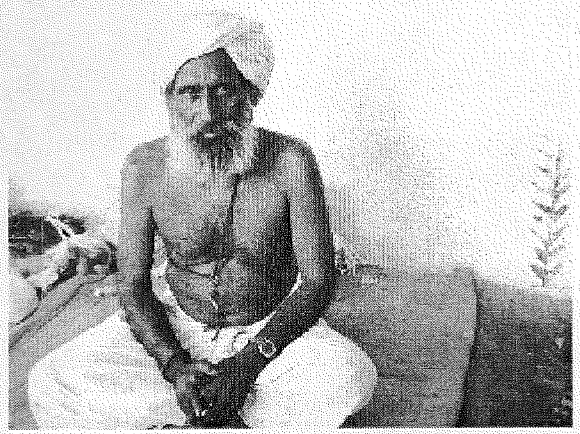

गॉव के लोग मानते हैं कि उनके गावं में विध्यमान देवबणी औरणो की सुरक्षा साधु लोग अच्छे से कर सकते हैं। किरोडी कुण्ड देवबणी में बहुत जाति प्रजाति के वृक्ष है और पानी का कुण्ड भी है जो साधु श्री रालखन दास ने इस देवबणी को बचाने के लिए वन विभाग से टक्कर ली। इस देवबणी में पक्षियों के लिये गांव से चुग्गा मांग कर लाते है तथा वहां के जीव जन्तुओ को खिलाते है महात्मा जी के जो यहां चढावा आता है उसे यहा वृक्षारोपण व कुण्ड की मरम्मत पर खर्च करते हैं। यहां के महात्मा जी ने देवस्थान विभाग के साथ भी मिलकर यहां पर विकास कार्य हेतु भाग दौड करते रहते है तथा गांव के साथ भी बैठक भी करते रहते है।

इसी तरह बेरा गांव की जैपाल देवबाणी मे साधु ने वृक्षारोपण व पानी हेतु एनिकट, 'टक' चैकडेम में भी कृपा संस्था से सहयोग लेकर पुनरोत्थान कार्य किये। यहां तक कि बेरा की देवबाणी में साधु ने गांव कें पशुओं को पानी पीने के लिये देवबणी झरने से नल लगाकर पानी को बेरा गांव तक पहुचाया तथा बेरा गांव में पशु व मानव को पानी उपलब्ध कराया। साधु ने तो देवबणी तक जाने हेतु कई बार रास्ता भी सुधारा गया। जिसमें देवबणी तक पहुंचने में आसानी रहे।

सीरावास गांव की देवबणी में बाबा बिजलीनाथ ने कृपा संस्था से सहयोग लेकर मिट्टी कटाव व नमी रोकने हेतु छोटा 'टक' चैकडेम तथा कुइया का निर्माण किया व प्रबन्धन हेतु ग्राम स्तरीय संगठन का गठन किया। अदावल देवबणी के साधु बाबा अमरसिंह ने यहां पर देवबणी में अनेक प्रकार कि जडी बुटिया उगातें है आस पास खाली जगह मे वृक्षारोपण करवाया। गुर्जरबास की देवबणी के संत बाबा श्री सजनदास महाराज जी रात दिन यही पर रहकर देवबणी सुरक्षा को ही भक्ति मानते और बाबा इस देवबणी से जड़ी बूटियां इकट्ठी करके एक भयानक बिमारी कैंसर का ईलाज करते है।

पिछले 8 से 10 वर्षो में यह सामने आया कि औरण देवबणीयों में जडी बुटियो कम हो गई और साधु भी अब लंबे समय तक देवबणीयो में रुकने वाले बहुत कम रह गये है क्योंकि अब उनकी खाने, रहने, आदि की व्यवस्था डगमगा गई है अगर वापस साधुओ को स्थाई रहना है तो औरण देवबणीयों से विलूप्त जडी बूटिया पनपानी होगी और समुदायो को जागरुक करना होगा। कृपाविस टीम ने जब साधुओं से बात चीत की तो ऐसा लगा कि कई साधु तो देवबणी औरण संरक्षण को लेकर चिन्तित हैं। कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस या कृपा संस्था) नें साधुओं के साथ मिलकर अनेकों देवबणी में वृक्षारोपण, भू जल संरक्षण जैसे महत्वपुर्ण कार्य किये, जिनमें साधुओं का सहयोग मिला। अत देवबणी ओरणों के रखरखाव व संरक्षण में साधुओं/सूफिओं अहम भूमिका रही है।

– द्वारा रूद्रदत्त जोशी

ओरण/देवबणियों के संरक्षण व बेहतर प्रबन्धन हेतु सम्मानित किया जायेगा ''ओरण प्रहरी'' पुरूस्कार से

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा वर्ष 2007 से प्रतिवर्ष "ओरण प्रहरी" नामक पुरूस्कार दिया जायेगा। यह पुरस्कार ओरण देवबणियों के संरक्षण व प्रबन्धन में उत्कृष्ट कार्यों के लिये दिया जायेगा। इस पुरस्कार से ऐसे व्यक्ति, संस्था, ग्रामपंचायत, वन समिति, महिला मंडल, ग्राम स्तरीय संगठन एवं साधु/सूफी या अन्य कोई जिसने ओरण देवबणियों के संरक्षण, सुरक्षा, पुनरूत्थान आदि में विशेष भूमिका/योगदान दिया हो, को प्रतिवर्ष कृपाविस के एक विशेष वार्षिक आयोजन में सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार हेतु चयन कृपाविस द्वारा गठित 'ओरण प्रहरी पुरस्कार संचालन समिति' द्वारा किया जायेगा।

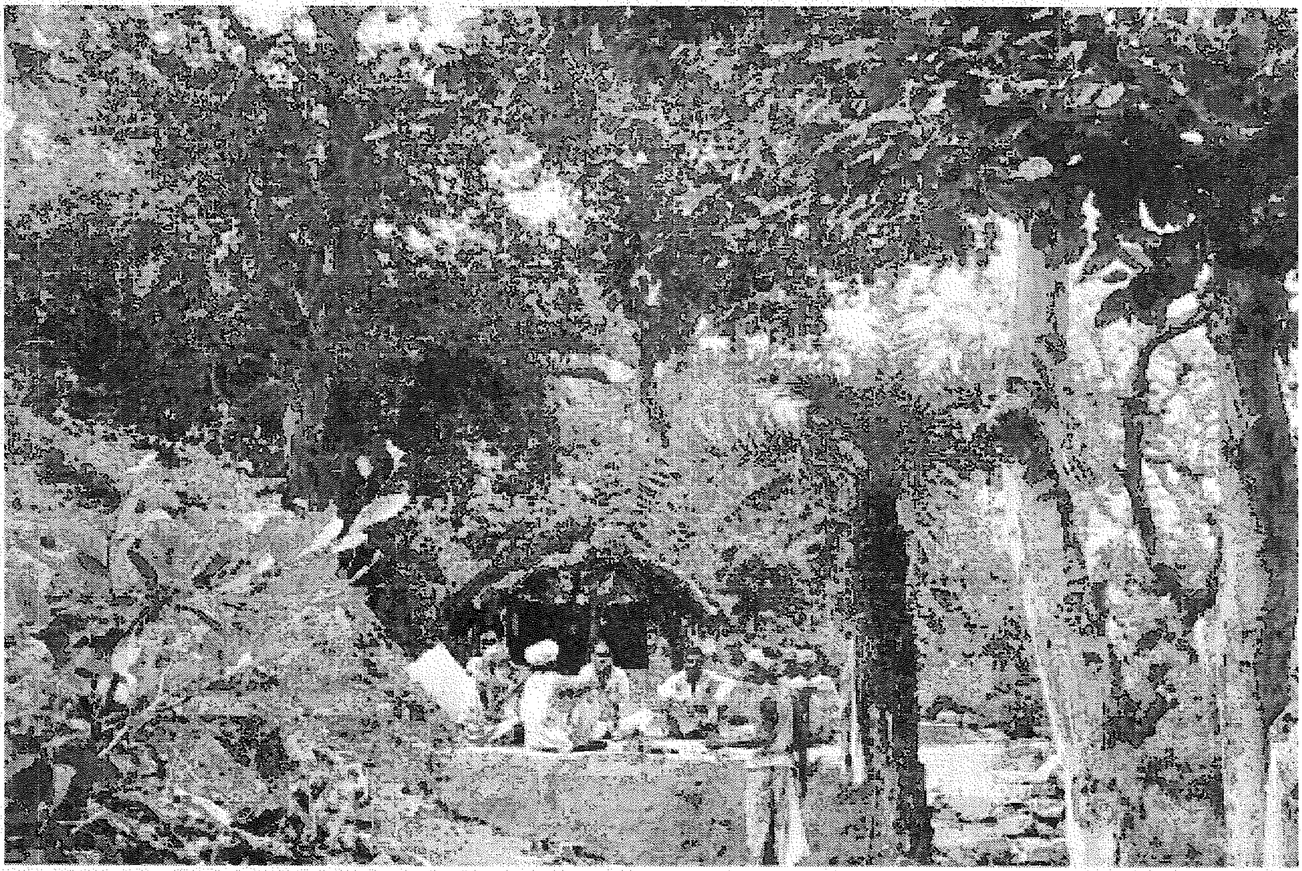

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) , बख्तपुरा, अलवर (राज.) द्वारा जनहित में सिमित प्रसारित।
इस अंक के लिए आर्थिक सहयोग मिजेरियर से प्राप्त।
मुद्रक : गणपति प्रिन्टर्स, अलवर फोन : 9828353129